

प्रदस्त्र १ श्रीश्री ॥ मासादि नामकायालव स्तव पमान

माल सूर्य

दुर्गा

१ हाका श्रिष्ट्र नमाश्र — शिव विष्णू

१ गंगा पुष्कर नर्म्मदा तुर्थीना, ॥ बदव विन्ध्य मति, निर्म्मदा सिंधू का

व विपूर्ब्व कुरा गया प्रयाग बद्रि वाना नाग सिंधू षू, कुल्या सतु

सनत्व तिपुर तिषु व्रह्मा पुना ॥ आदन, गिथ म्रान सहस्र वाटि रु

नर्दं श्री वक्र यादाद कै ॥

५

म

॰ ॐ नमः श्री पञ्चबुद्धनाथाय नमः ॥ प्रातकृत्यमाय ॥ सु-
र्थ दाक्षुनां ढस्युनू नूस्काव ॥ थानिमकुनान ॥ गु खचुमकु
लाकाव । श्राद्धंअन वंवाव वं । तर्पं दं दर्गितंजन तस्य
श्रीगुरवे नमः ॥ ॥ प्राणायाम ॥ षडंगन्यास ॥ जप १०
८ ॥ मानसाधपचाव पूजा ॥ स्तोत्र ॥ ॥ धर्मप्रातकृति

॥ ॥ शौचादिकर्मवन ॥ ॥ स्नानविधि ॥ ॐ गुमस
ल ॥ ह्रीं वाल्लमसल ॥ सौः ॥ ब्लू धू वाल ॥ ॐ ह्रीं सौः ॥
ख्वावसप ॥ नासिय ॥ ॐ आत्मतत्त्वं शोधयमि स्वाहा ॥
ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ सौः ॥ शिवतत्त्वं शो-
धयामि स्वाहा ॥ वावर्गं पिक्किय ॥ उर्द्धकसि विकूपा

क्षि मासस्रानिनयस्विनि। निस्कृदविनिस्वानम्ये यामू
स्तुत्वयथाञ्जित॥ थवनाहिमायथकावलंखमदून॥
लंखसत्रिकोणयाय॥ मूलमन्त्रनलंख ऊयवयय्वन
१०। थनु [illegible] यानिमूद्राकन॥ लंखस्रा थलहायाय॥ थ
मीसाथवहाय॥ थनासनानयाय॥ न्यायत्रिनऊयप१०॥

ॐ त्रिपुरादेवी विद्महे क्लीं कामेश्वरी धीमहि सौंः तन
न्नाक्लिन्ने प्रचोदयात्॥ थनासूर्य्यार्घयाय॥ ॐ ह्रां ह्रीं स
ः श्री सूर्य्याय अर्घं नमः॥ थवमाललंखनान॥ ॥
बिन्दुतिर्थानयाय॥ ॥ थ्वनसस्नानविधि॥ ॥
१ थनानित्यकर्म्मयायथायवन॥ ॥

ॐ नमः श्री घनदेवतायै नमः ॥ नासिय ॥ ॐ आः स्मन

र्त्वं गोपयामिस्वाहा ॥ ॐ आः विघ्नान्त्वं गोपयामिस्वाहा

॥ सौः शिवन्त्वं गोपयामिस्वाहा ॥ ध्वल नासिय ॥ ॐ

ह्रौं श्रीं द्वारदेवताभ्यो नमः ॥ द्वारसत्कार्तन ॥ धर्मशि

व... व... नप ॥ ॐ आः ध्यानपक्षि कमलासनायन

मः ॥ आसनसत्कार्तन ॥ गुन ॐ पंचरवसे ॐ गुरुवृक्षाय नमः ॥

पंचगव्यसंगन्धपत्रयन्नमः ॥ मूलमन्त्रप्राणायाम ॥

भूतशुद्धि ॥ भूयगर्पणं ॐ हूं ता ॐ हूं ता हूं विसंक्षि

ता ॥ ॐ हूं ता विघ्नकलशं तन्त्रसंगुह्ये गिवाक्य ॥ ॥

दशदिग्बन्धकिर्तन ॥ प्राणायाम ॥ ॐ ... ॐ वज्रास

त्याव खवन सा दूकाय ९२॥ क्लूँ नयंक्षा सदया
व सादूकाय १६॥ क्लीं खवक्षा स क्लूँ भयाव ऊवक्षा
सन पिन १०॥ ध्रुँ मव ढववक्षू दक्ष नाथ॥ थवनू
ग्वन थियाव॥ क्षूँ ह्रीं क्षौं १०॥ वावा षर्ठ गन्धा सयाय॥
ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः४॥ ह्रीं तर्ज्जनिकाभ्यां नमः४॥ सौः४ म
ध्यमाभ्यां नमः४॥ ऐं अनामिकाभ्यां नमः४॥ ह्रीं कनिष्ठि
काभ्यां नमः४॥ सौः४ करतलपृष्ठाभ्यां नमः४॥ ऐं हृदया
य नमः४॥ ह्रीं शिरसे स्वाहा॥ सौः४ शिखायै वौषट्॥
ऐं कवचाय हुं॥ ह्रीं नेत्रत्रयाय वषट्॥ सौः४ अस्त्राय फ
ट्॥ ऐं अस्य श्रीविद्यामन्त्रस्य आनन्दऋषि४

त्रिष्टुप्छन्दः ॥ श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी देवता ॥ क्लीं बीजं ॥ सौः

शक्तिः ॥ ह्रीं कीलकं मम सौभाग्यार्थे जप ॐ ह्रिं विनि

योग ॥ ॥ अंगुलिकादिन्यासं ॥ १ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं सौः ॥ अंगु

ष्ठरूद्रा माहकान्यास ॥ ॥ अनाश्रीवक्रन्यासः ॥ ऐं ह्रीं

श्रीं त्रिंदुवक्रासनायनमः ॥ कुकुस ॥ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिका

णवक्रासनायनमः ॥ भ्रमस ॥ ऐं ह्रीं श्रीं अष्टावव

क्रासनायनमः ॥ सिद्धासु ॥ ऐं ह्रीं श्रीं अकुदंशनवक्रा

यनमः ॥ कण्ठस ॥ ऐं ह्रीं श्रीं वहिर्दंशनवक्रायनमः ॥

हृदयस ॥ ऐं ह्रीं श्रीं अकुर्दंशनवक्रायनमः ॥ नाभि

स ॥ ऐं ह्रीं श्रीं अष्टदलकमलासनायनमः ॥ लिंग

सा॥ ऐँ क्लीँ सौँ अष्टदलकमलासनाय नमः॥ मल
द्वावसा॥ ऐँ क्लीँ सौँ चतुरस्रत्रिविम्बायै नमः॥ यावद्
सा॥ यन्त्राकुँ गन्यासु॥ मूलमन्त्रण, षव, ङिवग, कथ
ध्यवर्नम॥ ऐँ क्लीँ सौँ क्लीँ ह्लीँ ह्लूँ श्रीमल्लत्रिपुरसुन्दरी
श्रीपादुकां॥ ध्यान॥ ... ॥ शंखखड्गपनयाय॥

वँदगकलात्मनं नमः॥ मंविस॥ क्लीँ द्वादशकलात्मं
नमः॥ शंखचा॥ लंखर्थन॥ नीणतिऊमूनयेव, भद
वतीसनस्थुता॥ नमभिदामिं भूकावती, ऊलस्मितंनि
धिंकूनू॥ ऐँ क्लीँ सौँः त्रिपुरसुन्दरी ऊलपात्रायस्वाहा
॥ ऐँ हृदयायनमः॥ क्लीँ शिरसेस्वाहा॥ सौः शिखाय

वौषट्॥ ॐ कवचाय हुं॥ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्॥ सौ

ः अस्त्राय फट्॥ धेनु, यानि, शंख, मुद्राकर्तन॥ ध्याय

॥ सूर्यमण्डलाय॥ चतुः पीठयनमः॥ घजसनाय २

॥ ॐ अग्निमण्डलाय दशकलात्मकाय नमः॥ म वि

सौ॥ ॐ [illegible] ॥ग॥ सौ अर्घ्य

यफट्॥ सकल॥ ॐ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मका

त्मन ग्रीवाप्राय नमः॥ संस्कार॥ मूलमन्त्रपसाय॥

सौः अस्त्राय फट्॥ लखनताय॥ सौः अस्त्राय फट्॥

ताडन॥ ॐ कवचाय हुं॥ अवगुण्ठन, धेनुमुद्रा॥ धे

नुमुद्राकर्तन॥ अमृतकथा दिव्यस्वाहाय॥ ॐ हूं कैं २।

थै १२ मूल दला क पूया व ऊ प या य ॥ म ङ्क म ङा न का
क पूया व ॥ ॐ ग्रू म त ग्रू मू ता कृ व ग्रू मू त व र्थि ग्री
ग्रू मू तं ध्रा व य र २ वों ४ सू था धु क्रु गा र्य वि मा व य श्व
ङु व न्न यि नां थिद्धि षा म थीं द रु २ म ङा ख व नी मू ङां
प्र क ट य र २ द्रूँ हू खा का ॥ व ध्मा णु ख णु र्षि हू त म ग व

व स र्सी रु वीं । ग्रू पू वि त म ङां घा र्दि पी यु ख न स मा रु व
॥ थ ना या ग स थान । ॐ ३ न ग्रूँ १६ ॥ खों ४ स्रा म म ग्रू ना
य घा ७ म क ला था का मन न म ४ ॥ कुं च रु व त्र व ति कु
ला म कु ग्या न म ४ ॥ हूँ ग्रा न दू र्व वा य व षटू ॥ हूँ
ग्रा न द्र र्न व च्चे वी घ ह्रू । ट्रू । ता न य ॥ हूँ हूँ हूँ हूँ हूँ

नमः ॥ वनस्वाननाथाय ॥ हाय ॥ थावशिवगुरुनाथेन
याय ॥ श्रीनाथाय नमः ॥ सिद्धिनाथाय नमः ॥ श्रीसिद्ध
नाथाय नमः ॥ पनाश्री अघूजा ॥ ऐं श्री त्मनत्वाय नमः ॥
यनुननाथाय ॥ ह्रीं विद्यानन्दनाथाय नमः ॥ ह्रैं ज्रूकाननाथाय
॥ सौः शिवनन्दनाथाय नमः ॥ स्वाननन्दकूयथमः ॥ पनाची

० पूजायाय ॥ ऐं ह्रीं श्रीं चीं ० द वनास्थाननमः ॥ ऐं श्रूः धा
वगकिकमलासनाय नमः ॥ व क्ष्मयधासनाय नमः ॥
विष्णुप्रेतासनाय नमः ॥ रुद्रप्रेतासनाय नमः ॥ ईश्व
रप्रेतासनाय नमः ॥ सदाशिवप्रेतासनाय नम
ः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं दद्याम्नासनाय नमः ॥ ऐं ह्रीं श्रीं कुब्जिकासनाय

नमः॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्व्वमन्त्रासनाय नमः॥ ॐ ह्रीं श्रीं साध्य
सिद्धासनाय नमः॥ श्री कामेश्वरीमूर्त्तये नमः॥ कल
कलुषिकामूद्रान आवाहन॥ महापद्मवनान्तस्थे का
णा) वँनन्द विग्रहः। सर्वभूतहितेमातः एह्येहि परमेश्व
रि॥ त्रिखण्डमूद्रान स्थानकायाव स्थानयाय॥ वाल

र्क्कमशुलां हायां, ककुवाद्रू लिलावनी याबं कूगग
वांस्यायं, थावयन्कीं लि बीहऊ॥ ध्यानध्यान॥ पिलिहा
ल॥ देवलिहंकि सनह, पवि वावयमं खिन। याव
त्वं पूजयिष्यामि, तावत्वं सन्निधौ भव॥ आवाहन॥
स्थापन॥ ॐ ह्रागच्छ ॐ ह्रसौं निँद्राधाम, अवगुण्ठन
महात्रिपूरसुन्दरी। ॐ हसि हर मि

वालपतिका ०० द मासनम ४॥

ॐ कवचाय हूं मूलन स्वागतं पाद्यं, अर्घं, आचमनि
य मधुपर्कं, पुनआचमनियं, स्नानं, वस्त्रं, आच
मनं, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तर्पण, ताम्बुल
नमस्कार ॥ थनाऽयुक्त कायावआवव पूजायाय ॥ ॥
ॐ ह्रीं श्रीं अं कामेश्वरी नित्या श्री पा पू ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आं भगमा
श्रीं

लिनी नित्या श्री पा पू ॥ ॐ ह्रीं श्रीं इं नित्यक्लिन्ना नित्या श्री
पा पू ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ईं भेरुण्डा नित्या श्री पा पू ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
उं वह्निवासिनि नित्या श्री पा पू ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऊं महावज्रेश्व
री नित्या श्री पा पू ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऋं शिवदूति नित्या श्री पा पू
॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॠं त्वरिता नित्या श्री पा पू ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऌं कुलसु
श्रीं

न्दरी नित्या श्री पा पू॥ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नित्या नित्या श्री पा पू॥
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं नीलपताका नित्या श्री पा पू॥ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं वि
जया नित्या श्री पा पू॥ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ सर्व्वमङ्गला नित्या श्री
पा पू॥ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ज्वालामालिनि नित्या श्री पा पू॥ ऐं ह्रीं
श्रीं ॐ विचित्रा नित्या श्री पा पू॥ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ महानि

प ३
त्या श्री पा पू॥ ऐं ह्रीं श्रीं परमेष्ठि गुरु श्री पा पू॥ ऐं ह्रीं श्रीं
श्री परमगुरु श्री पादुकां॥ ऐं ह्रीं श्रीं श्री गुरु श्री पा पू॥ स
र्वगन पूजा॥ त्रि बीज लि॥ ऐं ह्रीं श्रीं समस्त कटगुपताव
र्त्तिं प्रदायक कुल कौलिनि गर्हित वक्ष्य पवा पुनव क्ष्य पवा
पवा लि व क्ष्य योगिनीगणश्री पा पू॥ ऐं ह्रीं श्रीं वा स्कव

गुरुस्वामसुन्दरीनिमाख्यागुरुसिद्धियोगिनीश्रीपापू॥ ऐं
क्लीं श्री मध्यवक्रगुरुस्वामसुन्दरक्रमाख्यादिगुरुमात
कालेश्वरीश्रीपापू॥ ऐं क्लीं श्रीं ॐ नन्दगुरुक्रमस्वामसुन्दरस
र्व्वक्रीं क्लीं हित्यादिनवमुद्रादेवीश्रीपापू॥ ऐं क्लीं श्रीं त्रि
पुरावक्रेश्वरीश्रीपापू॥ ऐं नमः प्रकटयोगिनीसर्व्वा

पद्यादिपूजितास्तर्पितासन्तु॥ ह्रीं॥ ऐं क्लीं श्रीं कामाकर्ष
ण्यादिषोडशनित्याकलादेवीषोडशदलवक्रेश्वरीश्रीपा
पू॥ ऐं क्लीं श्रीं त्रिपुरेश्वरीवक्रेश्वरीश्रीपापू॥ ऐं नमः
गुप्तयोगिन्यः सर्व्वाशापरिपूजितास्तर्पितासन्तु॥
क्लीं॥ ऐं क्लीं श्रीं कं खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमादिगुप्त

लवक्रांचविग्रीयापू॥ वँ क्लीँ ग्रीँ त्रिपुरसुंदरीवक्रांच
वीग्रीयापू॥ नमाः४ गुरुकमलयागिन्य४ सर्वाथ पवावैपू
जिमाकर्पिमासन्तु॥ क्रीं॥ वँ क्लीँ ग्रीँ सर्व्वसंक्षोभिण्यादि
वकुर्द्दगणविकवकुर्द्दगा नवक्रांचवीग्रीयापू॥ वँ क्लीँ ग्रीँ
त्रिपुरवासिनीवक्रांचवीग्रीयापू॥ नमाः४ संप्रदाययो

गिन्य४ सर्वाथ पवावैपूजिमाकर्पिमासन्तु॥ क्रूँ॥ वँ क्लीँ ग्रीँ
सैँ क्लीँ ग्रीँ सर्व्वसिद्धिप्रदादिवाह्नदेगा नवक्रांचवीग्रीया
पू॥ वँ क्लीँ ग्रीँ त्रिपुराश्रीवक्रांचवीग्रीयापू॥ नमाः४ कुलकौ
लयागिन्य४ सर्वाथ पवावैपूजिमाकर्पिमासन्तु॥ स्त्रँ॥
वँ क्लीँ ग्रीँ सर्व्वरक्षादिकुलदेगा नवक्रांग्रीयापू॥ वँ क्लीँ

ग्रैं त्रिपुरमालिनी वक्रछ्वरी श्री पा पू॥ नमा४ निर्गु
ण्ड्यायिन्य४ सर्वार्य वाचे४ पूजितासुषिता संगु॥ ऐं
॥ ह्रैं क्लीं श्रीं ब्लूं वसिन्यादि अष्टवाग्देवतास्वक्षाम वक्र
छ्वरी श्री पा पू॥ ह्रैं क्लीं श्रीं त्रिपुरासिद्धा वक्रछ्वरी श्री पा
पू॥ नमा४ वकुछ्ययागिन्य४ सर्वार्य वाचे४ पूजितासु

षितासंगु॥ ध्रूं॥ ह्रैं क्लीं श्रीं अं आं लं वं गं डं दं क्लीं ब्लूं घ८
॥कामख्वपि वि वासामपू वंदवताश्री पा पू॥ ह्रैं क्लीं श्रीं
श्रीं वाकु वासिस्वक्र कामगिर्यालय मीषीग नाथाल
ह्रीं क कामख्वरी देवी बूढात्म गाक्रि श्री पा पू॥ ह्रैं क्लीं श्रीं
हसकहलह्रीं कामनाथस्वर्य वक्रजालींधर पी८

षष्ठिगनाथस्मिक वक्त्रेश्वरीदेवीविष्णुात्मकैं शक्ति श्री
पादु ॥ ऐँ क्लीँ श्रौँ ह्स्ख्फ्रेँ शक्तिबीजस्वामवक्त्रे पूर्णगिरिपीठ
उड्डीशनाथस्मि कलगमालिनीदेवी ब्रह्मात्मकशक्ति
४ श्री पादु ॥ ऐँ क्लीँ श्रौँ त्रिपुरावाम्वावक्त्रेश्वरी श्री पादु ॥
नमः ४ पञ्चाम्प्रवक्त्रस्य योगिन्य ४ सर्व्वा पञ्चवा ४ पूजि

मातर्पिता सेउ ॥ सौः ४ ऐँ क्लीँ श्रौँ क्लीँ ह्स्ख्फ्रेँ ह्स्रौँ वक्ष्य वक्त्रा ड
श्रानपीठवथ्यानाथस्मिक ॐ श्री पादु ॥
ऐँ क्लीँ श्रौँ त्रिपुरवैनवीचक्रेश्वरी श्री पादु ॥ नमः ४ पञ्च
पञ्चानि वक्त्रस्य योगिन्य ४ सर्व्वानन्दमयं वैध्वचक्र
स्वाविपर्व ब्रह्माण्ड पूजिनी पञ्चामृत शक्ति ४ सर्व्ववक्त्र

श्वरी सर्व्वमन्त्रेश्वरी सर्व्वविद्येश्वरी सर्व्ववीजेश्वरी
सर्व्वचित्तेश्वरी सर्व्वयोगेश्वरी सर्व्ववागीश्वरी सर्व्वसि
द्धेश्वरी सकल जन दुःखनिर्म्मालिका ॥४ सर्व्वोपचारै ४
महानन्दभैरवी ४ श्रीमहा महाप्रभु पूजनसम्बन्धे ४ पर
याब्रह्मणयापनापवयासपर्श्चेया सर्व्वोपचारै ४ पूजा

नानपितृसं ॥ ॐ ॥ मूलाकलना ॥ थिमी उलिश ॥ बहु
णमधुकलसकतीन ॥ ॐ ख्यापककैम लासनाथनम ४ ॥
ॐ क्रों ग्रीं सर्व्वदूतनाथ बलिं गृह्न २ हूं २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं वां ॐ २
वटुकाय बलिं गृह्न २ हूं २ हूं स्वाहा ॥ ॐ क्रों ग्रीं योगिनि
स्यो बलिं गृह्न २ हूं २ हूं स्वाहा ॥ ॐ क्रों ग्रों क्षं क्षेत्रपाला

य वलिंग्रक्षर ह्रूं फट् स्वाहा॥ ऐं क्लीं ह्रीं गँ गणपतये व
लिंग्रक्षर ह्रूं फट् स्वाहा॥ ऐं क्लीं ह्रौं उर्द्ध्वब्रह्माणुवावा
दि विगणपतलक्ष्मतलं निक्कबायाताल वानलवास
लिलयवनयायवकुलक्षिवाक्कनयीप्रेब्रप्रिभवि
क्ष्व कणपदाक्ष्मपदीपादिकनखीनाद क्ष४सद।

न४श्रुरवालिविधिनायपकु वीनदं वंद्वा४यीयागिनी
स्या वलिंग्रक्षर ह्रूं फट् स्वाहा॥ ऐं क्लौं ह्रौं समस्तपकट
स्फुकनवर्संपदायकुलकोल निगर्वविद्रुस्थपनापव
वद्रुस्थयवापवापिवद्रुस्थयागिनिस्या वलिंग्रक्षर ह्रूं
फट् स्वाहा॥ ध्यानवलिविय॥ मूलमन्त्रं वलिवियव४॥

वलिसकस्थानकम्॥ वटुकाय ४ स्वाहा ४ सर्व्व सर्व्वविघ्न
विनाशिनि कुरु मम शान्ति ४ पुष्टि तुष्टि नाशं गणप्रसादय
४॥ नानाविधमुद्रा कन॥ यमलंवनकाय॥ त्रियौं कलि
॥धूप, दीप, नैवेद्य, ग्यावनित॥ समस्त वस्त्र वस्त्र वलि
पूषदवीनवा नितिका॥ आनात्रिक मिदं पूर्व्वं गृहान
ओंमालम दामाय ह्रान नमानं स्वरूपिनी। वंद्वं मैत्रि नम
नस्माल्वी सिद्धिदस्तु व ४॥
मम सिद्धय॥ नैवेद्य तर्पण ४॥ ओं जय ह्रा सुरुष्का लिगुरु
णा पूर्व गृ ल्पा मौ स्वकृनं ऊर्यो। सिद्धिर्क वक मम मा
४ ल्वन्व साधा ल्वयि क्विन॥ काण॥ ॥मायाकुण्डलनि
ह्याम धूमति कालि कलामालिनि मातंगि विजय
जया भगवति देवी शिवा गौरी देवी। गङ्गी गंकल बल्ल

नी

साघिनु यनिवाग्वादिकेनवी, ॐ कालिक्षिपूजाय
मायवमामाकोमानिलृसि॥ ॐ र्थे ऊल्यगिर्यंगक
वमघिमूडाविनखनं, गवीयादक्षिन्यकमवमदना
ख्याकृतविधिाखुनामसंवं, सूखमखिनमालानख
नदक्ष, सपर्यापर्यायतवकूवकुभैकल्मविन वि

स

ती । आवाहनंनऊनामि, नंवनाऊमिपूजनो। विस
ऊनंनऊनामि, खगति यवमख्यवी॥ पून्यग्रगवर्ण
नाक्षि, लमवंगवर्णमम। तख्याकोवनूलावुलपुक
पुद्धयवमख्यवी॥ ।पंचमूडानखाना॥ वाड़ीकी
पूसह॥ मूलनमर्यप३॥ विनयानिपूजा॥ नाक्षिघु

आ॥ तत्वमाधन॥ सुधि पात्र कायाव धाकि विय प २४
धर्म काय॥ ध्वम त्रन ॐ ह्रीं सो सर्व तत्व प्रयी डि वी
ल्मव यामि स्वाहा॥ ध्यान द्याय दं पून दाव पु सुधि
पात्र सर्वादि स्थान कायां समर्पणयाय॥ ॐ ह्रीं ॐ
नः पूर्व प्राण वृद्धि य र्म्माधिकाव ता जाय त्वध्रं वं
सु

सु दा
धूर्वं स्कन्ध सू मन सावा या कर्म्मणा कुरु स्वाहा र्यं ड्रीं म
द्वंश विघ्नाय न्ह्मतं यथा तं यदु कि तत्व व ॐ वं ड्रीं प
दीसिव कुस्वाहा॥ ओख कायाव॥ साधु वा साधु वा क
र्म्म यथ दाव वि दि मया॥ त स्य घर्व रु व स्वंव गृहनाव
धर्म मम॥ ॥ संकान मूडान वनि विसर्जन याय॥

गङ्कुरयनक्षुनं, खक्कनंयवभेव। यत्तुक्षादया
दवा, न विदू४ पुवर्मे यदं॥ देवाक्षाय, वलि, क्षाय॥
देवस्के वाढखा, कायाव नाउछाव लिस वायु॥ स्वा
न कृकाय॥ थमकुय॥ श्रीयाग सवाढमर्प नयाका
व, थव माग सपा नेकाव काय, कोवन॥ चवना

दक काय॥ वलि वाय॥ वलि सकतंन॥ ॐ निर्म्मा
ल्य वासिन्ये नमः॥ आनन्द खनूपन पिदावय॥ ॐ
लि निल्यक र्मा यद्ध लि ४ समाके ४॥ गुरुमस्तु सर्व्वदा॥

२ द्राकासिनामकायमान

॥श्रीदुर्गादेव्यैनमः॥ सूर्य्यार्घपुनः भवनिक्षमाल
क्षपूनकाव वेनातिनकवसङ्कापनयाय॥ नागिय
॥ष्वाचमयाम॥ न्यास॥ संकल्प॥ न्याय॥ गुद्धि आम
कायावाद्देवीपूवाम्लेकदेवी पूजा विहितकल्प
क्षिकामाकलसङ्कापनपूर्वकगन्धपुष्पधूपदीप
नैवेद्यादिकंगवन्याः श्रीदुर्गायाः भवदीपपूजाम
हंकरिष्ये॥ संकल्पस्य सिद्ध्यर्थं नमः॥ ततो गन्ध
पुष्पाक्षतं कवाम्ले पानायाम कृत्य स्थिद्धि मात्रका
न्यास॥ प्राणायाम॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे हृदया
यनमः॥ ऐं ह्रीं क्लीं शिरसे स्वाहा॥ ऐं ह्रीं क्लीं
चामुण्डायै विच्चे ।

ग्रीं वामृतुये विघ्नं गिरिवाथे वषट्॥ कुं वं क्रौं ग्रीं वामृ
तुये विघ्न कवचाय हुं॥ कुं वं क्रौं ग्रीं वामृतुये विघ्न
नेत्रयाय वौषट्॥ कुं वं क्रौं ग्रीं वामृतुये विघ्नं अ
स्त्राय फट्॥ अर्घपाद्य पूजा॥ कुं वं बलि विय॥ कुं क्रीं
सर्व विघ्नकृद्भ्यः सर्व भूतेभ्यो बलिं गृह्न २ स्वाहा॥

थ्वते धूनकाव वंकासायनयाय॥ थनाकू मीस्वथन
॥ कुं पृथिव्यै नमः॥ अस्त्राय फट् लीखनपाय॥ सत्व वि
कयन॥ [illegible] ये नमः॥ ओं कलस स्वोयन॥ मूलन यंवन
नमय॥ कुं सं पूर्ण कलशाय नमः॥ लीखथान॥ कुं व
रुणाय नमः॥ मूलन यंवपल्लव तयाव॥ सावरिवि छुन
वं क्रीं ग्रीं ह्रूं क्रौं ४ ओं [illegible]

शानय ॥ ॐ दुर्गायै नमः ॥ पूजनं ॥ दुर्गायै नमः ॥ पू

ष्पुं कवसघतिक्षायै नमः ॥ ॐ तिकलसघतिष्ठासंपूर्णु

॥ ॥ घीं ० गक्रिश्वानमः ॥ सिंहासनायनमः ॥ महिषास

नायनमः ॥ घनाध्यान ॥ कल्याकनविशालकायमयनीं

श्यानासमलगुलां ॐ कार्वीं हविनी खवूसर्पहस्तां

दक्षकर्णां । लक्ष्मीनायकसमकत्रिनयनीं ॐ कावि

श्रीं सर्वगं कल्याणीं ललितन्दु बिन्दुवदनीं ॐ कारतूय

कऊ ॥ ॐ तिवाग्न्यद्विरिगमध्यानं वा ॥ ॥ ध्वालागुं वाह्

॥ ॐ दुर्गे त्वं दुर्गे गृह्याणि सुभगे आमहाबल । महानन्द

कलदवीवरसिद्धममसिद्धये ॥ ॐ ध्वावाहयतु ॥ ॐ दुर्गे

दुर्ग्गेभद्रकालिस्वाहा॥ दक्षयज्ञविनाशिन्यै महाघोर
योगिनीकोटिपरिवृतायै ह्रौं श्रीं नक्षौं लीदुर्ग्गारक्ष
णिकायै भद्रकाल्यै नमः॥ ॐ अर्घ्यादिवाक्येन पाद्यार्घ्या
चमनीय गन्ध पुष्प धूप दीप नैवेद्यादि कन्दर्पानु॥
ममः पूजा मालहतु॥ ॐ आं कूट वज्र भुवनेश्वरी हुं

के नवसहितायै नमः॥ ॐ ह्रूं ऌं वज्रमाहेश्वरी हुं द
के नवसहितायै॥ ॐ वज्रकौमारी डक्के नवस
हितायै नमः॥ ॐ वज्रनायिका वैष्णवी मकारे नवस
हितायै नमः॥ ॐ वज्रवाराही कारे नवकायै नमः॥
ॐ वज्रवतिऌं द्राणि वकारे नवकायै नमः॥ ॐ वज्र

स्रुपावामस्तुउत्कौवेनवायै नमः॥ अँ अः॥ अनिवगिक
महालक्ष्मी अक्षौबेन वाये नमः॥ जय किम ङ्गलाकालि
रुद्रकालि कपालिनि । दुर्गा क्षमा शिवा धात्रि स्वाहा स्व
धा नमस्तुते । धनकस्वानमान । लक्ष्मीग्रा नमः॥ सन
खर्वग्री नमः॥ सं निर्वोग्री नमः॥ ॥ वैष्णिकाये नमः॥

सनतनाधिकाये नमः॥ सर्व मंगलाये नमः॥ क
लिकाये नमः॥ वज्रा ख्या घ्घ ष्णमाल्काख्या नमः॥ सन
स्त्रख्ये नमः॥ यमनाये नमः॥ अमिताभ वज्रे
नमः॥ सं सयाय नमः॥ वँ व ऊ स नमः॥ म म स नम
ः॥ घण्टि गलख्या नमः॥ खड्गाद्धिद ख्यायू धे ख्यानम

॥ हेतुकक्षेत्रपालाय नमः॥ त्रतपार्द्धय नमः॥ नैऋ
तदंष्ट्राय नमः॥ महादंष्ट्राय नमः॥ त्रिपुरान्तकाय
नमः॥ अग्निजिह्वाय नमः॥ भीमरूपाय नमः॥ मह
नाय नमः॥ ॥ मण्डलिनीभ्यो नमः॥ सप्तसमुद्रेभ्यो
नमः॥ सप्ततीर्थेभ्यो नमः॥ गंगादिनदीभ्यो नमः॥

न॥
मेर्वादिनगीभ्यो नमः॥ आदित्यादिनवग्रहेभ्यो नमः॥
इन्द्रादिदिक्पालेभ्यो नमः॥ प्रतिपदादितिथि
भ्यो नमः॥ अश्विन्यादिनक्षत्रेभ्यो नमः॥ विष्कंभादि
योगेभ्यो नमः॥ मेषादिराशिभ्यो नमः॥ ऊर्यावरस्म
सानाधिष्ठानभ्यो नमः॥ वाङ्गस्ताभ्याय नमः॥ गे

ल्यक्षाण्डुयनमः४॥ वृक्ष्मलनमः४॥ विघ्नवनमः४॥ वटुका
यनमः४॥ गणपतयनमः४॥ क्षेत्रपालायनमः४॥ योगि
भ्युनमः४॥ सर्वभूतादेवताभ्यानमः४॥ मूलनमियोजलि॥
ॐ क्रों ग्रां ध्रुं ध्रुं ॐ कुं क्रीं वाङ्कवदद ध्रुं ॐ ड्ग्रवण्डु विषम
ह्रिं पि ॐ कुं सदाविवदाश्लेष्मी ॐ हूं सः ४ मूलयुक्त

स्वाहा॥ ३॥ ॐ क्रीं ॐ ध्रुं ॐ क्रों ॐ ध्रुं ॐ नि ॐ क्रीं ॐ हूं ॐ ग्रां ॐ क्रीं ॐ क्रौं ४ ॐ ध्रुं
ध्रुंगिर्व्वसकुय ध्रुं म ध्रुं ह्रिंनिमाह्निममाह्रिंवि
कुं उगकावि पि ध्रुं ॐ क्रीं त्रें वकु४पी०वाउवा
उश्ववीमकावेवि मकावेवि विनासिनिकालकाला
ककाविलिसर्व्वदवस्वकृपिपीवेष्मविॐ क्रीं ॐ क्रीं ॐ जोंयां॥

यँ लँ वँ शँ नावाय लि वि ध्रू वक्र ध्व वितु ख्यालि त क्रौँ क्रौँ

ह्रूँ क्रौँ ग्रौँ ब्रँ नमः ॥ उग्र वण्ड्रोये वि घ्न हु दुर्ग्नो देवी धीम कि

तन्नू घ्र ण्डु ध वाद्यातु ॥ यँ वव लि । ध्वाकु म हा वलि ।

ब्रँ क्रौँ ग्रौँ दक्क यक्ष्मु विनाशि ख्वी महा घावाये यामिनि क

टि लि य वि हृ नाये क्रौँ भवक्का ली दुर्ग्नो रुद्दा नि का ये सा

भ्रये सय विवाये ॐ हूमा पू जा वलि । ॐ क्रुर हूँ रु

टू स्वाला । ब्रँ क्राँ ग्रौँ क्राँ क्रौँ क्रूँ रु टू यक्क वा कस हुला ध्व

माला ४ क्क त याल का ४ । जकि ख्य द्य म हा वाला ४ पूतना

कत पूतनाये । ० जा ४ कु त्र जा छे व गर्द जा स ह जा क्क

धा या गजा म नु जा छे व जल जा ध्व वि ल म वा ४ ।

नानारूपमनोयान्नु स्यारूपाचावल्लवर्ल्लैवा॥ नानादि
शालिनाशिन्यां॥ क्षुक्षिवर्द्धमनास्त्रिआ॥ समलापेनिय
वाक्ष्य श्लेचि वलिकाकिलमलपीडम्मासवेदिय
हधूपदीपादि लुम्ले॥ हृदय फदाउ ... ामानवाकि
वाचेवदहिमत्री जाबंवलिगः म्रारदूरुदु स्वाहा॥

श्रीइष्टदेवाय नमः॥ गुरुभिकुचुथवनिस्त्युनकाव ।
शुध्यानकायावस्तुर्यां थि॥ गुरुनमस्कार॥ गुरुवनुमपु
लाकावेखादि॥ वास्वायाम॥ करजोधन स्वन काय
वमकृत्यव गुरुत्रायखुद्रा॥ यहुँगा॥ तुंक्षोंवाखुपद
श्रीगुरुपाद्येनमः॥ धुँ उग्रवज्रि तडें निस्यों नमः॥ वि

पूमर्द्धिनिमध्यमास्थीनमः॥ द्रूँ कुँ सप्तावर्त्तकरसूनाभि
कास्थीनमः॥ ह्रीं मीं हूँ सः कनिष्ठिकास्थीनमः॥ मूत्थ
कर्व स्वाहा कव ननपूष्ठास्थीनमः॥ कुँ क्षीं वाह्युपद
हृदयायनमः॥ ॐ उग्रवल्गुजिह्वस्वाहा॥ नि पूम
र्द्धिनिशिखायैव ॐ षट्॥ द्रूँ कुँ सप्तावर्त्तकरकवा

यहुँ॥ ह्रीं मीं हूँ सः नेत्रत्रयाय वौषट्॥ मूलेन कवसू
चायफट्॥ ध्वतुलिनं जल पात्र अर्घपात्र पूजा॥ विघ्न
वलि॥ ॐ सर्व्वविघ्नकृद्भ्यः सर्व्वभूतेभ्यो नमः वलि नम
वामस्तु वलि॥ थनास्वकुत्कायावश्रावाहन॥ ज्ञोयाया
यवायवादवीरववीरवस्वनूपिनी॥ सूवलाकाग॥

देवी॰ ॐ यानुकूलमत्सुलम्बधनाथिदेवतापूजा ॥ ॐ
क्षेत्रपालाय नमः ॥ बलि ॥ वँ वटुकाय नमः ॥ बलि ॥
गँ गणपतये नमः ॥ बलि ॥ यँ योगिनीभ्यो नमः ॥ बलि
॥ अथ नायिकाचक्र पूजा ॥ ॐ धर्म्माय नमः ॥ ॐ ज्ञानाय न
मः ॥ ॐ वैराग्याय नमः ॥ ॐ ऐश्वर्याय नमः ॥ ॐ अ

धर्म्माय नमः ॥ ॐ अज्ञानाय नमः ॥ ॐ अवैराग्याय
नमः ॥ ॐ अनैश्वर्याय नमः ॥ ॐ अधश्छदाय नमः ॥
ॐ ऊर्द्ध्वच्छदाय नमः ॥ ॐ आम्भवगकाय नमः ॥ ॐ अ
नैलासनाय नमः ॥ ॐ कैलासनाय नमः ॥ ॐ नागास
नाय नमः ॥ ॐ पद्मासनौयैनाय नमः ॥ ॐ कंगनास

नायनमः॥ कुं कर्णिकासनायनमः॥ कुं हिं लासनायमन
मः॥ कुं मण्डिवासनायनमः॥ ततो पविवर्त्तीं ध्यायतु॥
ॐ मफवामी कनावर्णु नानापुष्पापद्मोंपि ताादिव्यव
कः पवि श्वनामण्डिवासनगामिनी॥ किवीटकुण्डलाकार
कहस्ते मणिनुपूरः॥ वनमालाविचित्रक्षलतमा

लावलीविनाशः॥ शूलसैदंकुआक्राकाकौ पीनवक्र
क्षनानूसासघ्रीलीकावसंयुक्ता तत्रिक्षाटिसमप्र
ता॥ लक्ष्मीसवक्षधावक्रवजाकुशधवाघुतावदकुं
मवृदक्षघूलपार्श्वसूत्रा हिताादक्षिणवकवान्न
यथालेशता कक्षपथ्वाद्दतकेश्वनुदक्षावगदार्षीत

सूक्ष्माहिता।या।गंवकगेनीहस्का।स्वद्वीगं कडार्यसकी।
विन्दुमूडाकथासिं बूहासिं दास ना।पविद्धि सक्ति
न्वालिनष्ठि चं माहि षंवैठ महास्तूवं।गङ्गाबाम्निगताद
ल्यं महावल यवाक्रमं।हृदयि स्वात्रिशूलन विधूता
साक्षि वाक्कूला।न वं ध्वात्वामहादेवी सर्व्व कामफलप

दे

दा।मधाधातजहस्काय स्वद्वीगं तमनू विना।कूष्व
प्लुाघवैजावस्तुनायिका।वस्तुावैजपनी वैवकत
वूपाक्षिवस्तुिका।गुरूपाधाबनाकस्म।नीलाघुकाव
५ मुका।धीमावपींजलाङ्कयागुलिरकरुकनिक्षिता।
पविवाधासमा।मूका।ज्ञायान्तुरूहमण्डल।।ॐ।निम

[illegible] नव म व ठ ज दु नमग । लि न व [illegible] न मा [illegible] न [illegible]

नीमव न [illegible] दि गै न मु [illegible] वि न ल ट [illegible]

मनु [illegible] व ग [illegible] नीगंध । नि [illegible] अ व न [illegible]

८३ [illegible] श्रीपरति । निसाह [illegible] संपहाति [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] क्रौं [illegible]

कनिष्ठ रक्षाय ॥ ममतो मूलमन्त्र य [illegible] ह्रां या यु ध्यो ॥ सिद्धं

[illegible] पद्मावे सर्व पूष्क मलनत्रियी जलि ॥ क्रुं क्रौं वांक्ष [illegible]

ड्य वज्रवि पूमर्दिनि ह्रूँ हुं सपावकर [illegible] मा ॥ [illegible]

कूं ह्व [illegible] ॥ [illegible] ॥ कुं ड्य वज्रा देवी विघ्न [illegible] दुन्तदेवी

श्रीमहालक्ष्मी पञ्चस्तुति देव्या दव्या [illegible] ॥ आं ह्रीं लक्ष्माय [illegible]

वपूज्य [illegible] ॥ लूं ह्र [illegible] यनमः ॥ भूं [illegible] यनमः ॥ मं

मायनमः ॥ क्रूं ने [illegible] यनमः ॥ वं वर्व [illegible] यनमः ॥

वाय्यनमः ॥ सं [illegible] वायनमः ॥ दुं [illegible] नायनमः ॥

कूं कूर्मय नमः ॥ कुं ब्रह्म [illegible] नमः ॥ जूं [illegible] बलि [illegible]

ग्नपूज्ये ग ॥ ह्रीं जयायै नमः ॥ क्लीं विजयायै नमः ॥ सौं अ
जितायै नमः ॥ लां अपराजितायै नमः ॥ मां जम्भन्यै न
मः ॥ यां स्तम्भन्यै नमः ॥ वां मोहिन्यै नमः ॥ यां आकर्ष
ण्यै नमः ॥ बलिवीय ॥ अङ्कदल ॥ ॐ ॐ कूदवधु अ
गिमांगरे नवसदिनवक्राण्यै नमः ॥ हूं हूं पवनु
वृदे नवसनीनमाकृष्ण्यै नमः ॥ ॐ ॐ वंजायां वंके
नवसकीनकोमाण्यै नमः ॥ ॐ ॐ वसुनायिकाकावे
नवसहिनवेक्ष्ण्यै नमः ॥ हूं हूं वसुउनाकनेनवसही
नवानाक्षै नमः ॥ ॐ ॐ वसुके नवसहीनम ॐ ॐ आ ण्यै नम
ः ॥ ॐ ॐ वंकपूयाहीवन के नवसहीनवामसुण्यै नमः ॥

ॐ अः अः निवलुकासंलावरो नवसडितमहालक्ष्मीन
मः॥ वलिंवा॥ मष्ठ्कवा॥ ताँ ताकिन्येनमः॥ वाँ वाकिन्येन
मः॥ लाँ लाकिन्येनमः॥ काँ काकिन्येनमः॥ साँ साकिन्ये
नमः॥ हाँ हाकिन्येनमः॥ वलिव॥ त्रिकाल यूर्ध्व
गिविपीठायनमः॥ आँ आनन्दवयीठायनमः॥ उाँ उा

ञानयीठायनमः॥ काँ कामरूपयीठायनमः॥ वलिंव
॥ मष्ठ्क॥ अँ उयचण्डे नमः॥ ह्रौं मंगलायेनमः॥ ह्रौं
कालेत्यै नमः॥ ह्रौं रुद्रकाल्यैनमः॥ ह्रौं कपालिन्येनमः॥
ह्रौं कूष्माण्डेनमः॥ ह्रौं शिवायेनमः॥ ह्रौं क्षमायेनमः॥
ह्रौं धात्र्यै नमः॥ मूलन त्रियाञ्जलि॥ खड्ग पूजनं॥ मूलन॥

क्षू तिय ॥ ॐ ह्रीं महिषमर्द्दि स्वाहा ॥ मधे ॥ ऐं ह्रीं श्रीं क्ष्मूं

ह्रौं ह्रीं नमो भगवति योगेश्वरि महाबल पराक्र

मे त्रिगुण पाप पुण्य गमनि आयु वायाग्य वर्द्धिनि सौभा

ग्यकारिणि सर्व्वार्थदायिनि सर्व्व दुष्ट क्षुद्दिनि भगव

ति वरवदने म ४ स्वाहा ॥ आवाहनादियानि मूलवीजं दुर्ग

यनु ॥ ततः पश्चं पंचबलि दत्वा दुर्ग्गा बलि दायपयनु ॥

मूलेन ॥ ऐं ह्रीं श्रीं दक्षयज्ञ विनाशिन्यै महाघोरायै योगि

नीकोटिपरिवृतायै ह्रीं भद्रकालिनी श्रीं दुर्ग्गे रुद्रा वि

कायै ॐ भो पूजा बलि गृह्न गृह्न हूं हूं स्वाहा ॥ ३ ॥ मद्य ब

लि ॥ थनाम्ह ऋग्य यमपान कलस पूजा ॥ थनाकूष्मपू

ॐ ह्रीं म ४ स्वाहा ॥

जा॥ सर्व्वगण्डुस्थलायनमः॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीआनन्दभै
रवाय सूक्ष्मदेवेनमः॥ कुं कुम् [illegible] [illegible] नमूर्त्ति
ह्रूं व, कू मूल व [illegible] निकू मूर्त्ति श्र [illegible] [illegible] वयरहूंस
स्वाहा॥ ॥ ॐ ह्रं ह्रं सं ह्रं कुल कुम्भ मूर्त्ति वालि [illegible]
रस्वाहा॥ थनाकुण्डेन सिंधमूर्त्ति पूजा॥ श्री श्रियेनमः

४॥ वाली॥ ह्रैं ल क्ष्मै नमः॥ धनाकुण्ड न जा पूजा॥ नं
क्रौं ग्रां कुमारी देव्या४ पीठाधिष्ठात्री नमः॥ अभयवासन
येनमः॥ कुमारी विश्वविकासू ह्रागकू [illegible] कलि [illegible] नु
मानि वाद्यायाथ भगीयामि॥ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः४ कु
कुम कौमार्य्ये नमः॥ गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य यु

तर्पण ॥ ब्रह्माण्यै नमः ४ ॥ माहेश्वर्यै नमः ४ ॥ कौमार्यै न
मः ४ ॥ वैष्णव्यै नमः ४ ॥ वाराह्यै नमः ४ ॥ इन्द्राण्यै नमः ४ ॥
चामुण्डायै नमः ४ ॥ महालक्ष्म्यै नमः ४ ॥ श्रीसिबीबाघ्रष
षवक्या नमः ४ ॥ थना ग्रियाँञलि ॥ धूप, दीप, नैवेद्य
पुष्प, तांबूल ॥ ञप, धुंखा, सा ॥ ब्ब ॥ स्काय ॥ याक्व
मलास, थिकाभयाया, द्धथसा ॐ ॐ सर्वे जनमाहनीश्री या हृ व नास्वा न

ब्यामम्भि वासिमा रगवती श्रीकृष्णवगुआदिरिर्व ब्रह्मा पीव
मूरवाजयादि, सकलाषत्थागिनीमष्ठितानानावन्य
नपूष्यधूप वलिकिर्यकानवम्याक्रिमा, सर्वापाद
गमीषयानवलिमा, सावष्ठिकायाकुमी ॥ यष्मग
क्रिस्काययाढाव ॥ तर्पन ॥ पीतछत्रतासदति ॥

ध्वम ॥ ॥ नासिसं निसनियाय ॥ ह्रं ॐ ध्वं पूनका
व, पासाक विधित्वं विय ॥ कुमारीह्न वयाथ्वं, थव मू
लन घंवा पवान नैवेद्य याय ॥ दशमीकर्म्म निस्य पून
काव ॥ गूपना ज्ञिना पूजा ॥ तगवति गूपना ज्ञिना ॐ
ह्रां नमः ॐ ॐ ह्रं तिष्ठ नमानि याना ॥ घंवमानीयानि ॥

ॐ गूपनाज्ञिताय नमः ॥ घंवा पवान ॥ थनाथमरु
वाथ्वं वार्घ नाया काव सदक्षिणा याय ॥ थनाङिगव
स्थं विसर्ज्जन ॥ पुरी ॥ ॐ दुर्ग्गं देवी उत्साह ॥ ४ ॥ स्वक्रनी
गच्छ पूजित । स्वस्थानं पनीतव, पून वागमनंनव ॥
दशमि विसर्ज्जन मन्त्र ॥ गमनं वार्घलाशय, क्षमायवि
ॐ क्षमापायैनमः ॥ थ्व म वाक्कन बाउ ६ ला पचाना पूजाया ॥४॥ ले [illegible]

उयायवामकु पकु विनासाय, पुनवागमनायव॥ प

यानक्वायमक्र॥ कु॥ मादक्कमिपद्धतिसमापक्ष॥ ।

॥ खावङ्कपय, पङ्कृकृङ्कृ, थवनिस्व पूनकाव॥

व दिसत्रियंजलिङ्काय॥ आनन्दयाय॥ क्षमायाय॥

वं स्वक्क नवासा रवनु॥ श्रीपनदेव द्यितिरगु॥ ।

१ श्रीपनदेवतायेनमः॥ मातृ ४ श्रीत्रिपुरदेवि स्वकृ ४ सर्व्व प्र

कासिनारकालान्कु धूनामातृ ४, ल्वमकेनरुवस्यायि॥ १॥

पूर्व्वजम्मनीदेवी दाक्कुल वनिलप्वनी। पश्चिमक्वाङ्कुकादे

वी उलनगुक्काकालिका॥ २॥ वजवेगावनीदेवी अमाम्न

यम्वनम्वनी। उर्द्ध श्रीब्रह्मक्व नूयाव, जगश्रीत्रिमूनाम्बिकाता।

॥ ३ ॥ एकसिंहासनी विद्या साक्षान्मुक्तिप्रदायिनी । कालिकां च
शिवकामाभिरूपवतीं छिन्नमस्तकां ॥ ४ ॥ वाराही मुण्डमुख्यादूतीं
नमामि सुन्दरीं परां । वन्दे देवकलां वालां कुब्जिकां गुह्यका
लिकां ॥ ५ ॥ सिद्धिलक्ष्मीं महालक्ष्मीं नमामि सुन्दरीं परां । काल
मूर्त्तिं विशालाक्षीं विमलां विन्ध्यवासिनीं ॥ ६ ॥ कामाक्षीं वत्स
लां चन्द्रीं नमामि सुन्दरीं परां । ऋगानुसाविमावद्ध ४ त्वल ङ्जा त्वम प्र
काशिकाः ॥ ७ ॥ त्रिकालं च पठेद्यस्तु त्वल त्रिपुरसुन्दरी । शिवा
दिवास्त्वयाद्रिग त्वं वागमात्र्काम्बरं ॥ ८ ॥ स सर्वे जगतां मातः
त्वल ४ त्रिपुरसुन्दरी । त्वदाङ्कम्य महावाक्यं अध्यक्षं नियमं
॥ ९ ॥ शिवशक्त्यात्मकं कौलं त्वल ४ त्रिपुरसुन्दरी । यन्त्रं भाव

हृतः श्मशानमार्गेत्र यमदीनिकं ॥ १० ॥ कौलयागविज्ञानेन कु
लेः त्रिपुरसुन्दरी। ब्रह्मानन्दकलाज्ञानं सविल्पूर्जुस्तनूपि
॥ ११ ॥ कुलशक्त्यैरपूर्वयागं तदाम् किं न वाप्नुयात् । तथाहि कौल
मार्गेण भीरुसर्वार्थसाधकं ॥ १२ ॥ यावत्कालं च सायुज्यं तस्मा
त्कौलप्रविष्टयत् । सर्वत्र सर्वदा मातः स्वच्छक्रियाब्रयददे ॥ १३

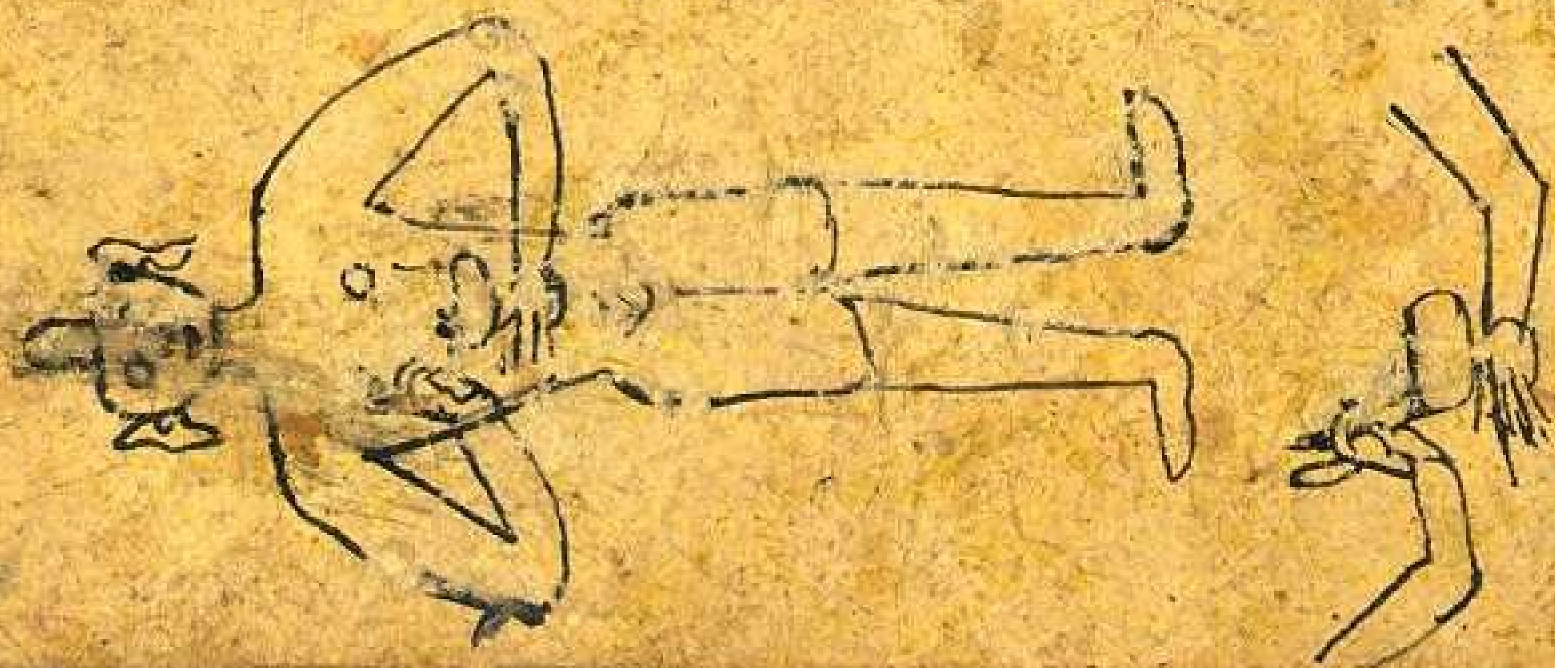
स्वल्पादवदनं शाजश्रीबद्रियनिमऊत्त ॥ त्वनौरुक्तिः पवाङक्ति
ः कपादस्त्रिः सदा मयि। कुलागमसदागच्छा जन्मजन्मान्तरानिव
॥ १४ ॥ इति श्रीजगदानन्दविरचिता श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः स्त
वी समाप्तः ॥ ॥ श्रीदुर्गायै नमः ॥ कुपवाधारुवयवसवक
स्यपदवधा। कायनः सहस्रलाक्ष केवलस्वामिनी विना ः

॥ १ ॥ नान्यं वदामि न शृणोमि न चिन्तयामि नान्यं स्मरामि न
भजामि न चाश्रयामि। भक्त्या त्वदीय चरणाम्बुजमादरेण मां
पाहि देवि कृपया मम देहि सिद्धिं ॥ ५ ॥ ब्राह्मा पू विनिवारयन्ति
निजगदिस्थारूविद्रावनि क्रन्दोलाविनिर्वेविमा विनिसदासं
सा नमाद्दाविनिश्रेयस्का विनिकायवल्लखवनवबन्धालादसनी
विलित्वां सच्चानित वाम हीक्ष रूलदां श्रीसिद्धिलक्ष्मी नमः ॥४॥
॥ ६ ॥ वाचामीश्वरि रुक्मि कल्पलतिके सर्वार्थसिद्धिप्रदे गच्छ
ज्ञानवनवन्दुस्मानिश्चसिद्धिप्रदे। नीलेन्दीवरलोचने त्रयय यूथका
नूनं वाचानि श्रोत्रा सहित वर्त्तिदीनकृपयापार्श विन्दामस्मा
कं ॥४॥७॥ १ श्री श्री [illegible] लू नमकार

१ श्रीश्री ८गूसायिया नामका याव पूजा यायमाय। ज्ञानाथ।



१ प्रथम स्मल निर्थी। गुसायि २ कृयद्वयं।



१ श्रीलिपी सिदउनी ‍ ि त्रम पिशिका न्वनी। हुयी के यसूरुल
दवी ह्ला नदाहिनिवुदरु ॥४॥
१ॐ तन्नी १ॐ न न्निनक न नि त्रि न्ध नमु धमान
मा र्ली धका नव त्रि य ह्ली नि सं विद (गो कस्यीपि दधि
सम नि चि वि का ७ ल रु भो = वि र्थं रुद्दा भि व स्रू धादि लिवाव
सा नं ॥






ॐ म ह्रूं नम॰ श्री पंचदेवतायै नम ४ मालिय ॥ ॐ आत्मतत्त्वं
शोधयामि स्वाहा ॥ ॐ क्लीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥
ॐ सौः शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥ आसनपूजा ॥ ॐ आधा
रशक्ति कमलासनाय नम ॥ गुरु नमस्कार ॥ ॐ रव गु
म लुलाकाने इत्यादि ॥ स्तव स ॥ ॐ गं गुरुभ्यो नम ४ ॥ खवस
॥ ॐ गं गणपतये नम ४ ॥ दथुस॰ श्री पंचदेवतायै नम ॥ मूर्तन
प्राणायाम ॥ अङ्ग ॥ न्यास ४ ॥ थवशिरस मूर्तन॰ ॐ नैव॰

२ ॥ अर्घपूजा ॥ ॐ अग्निमण्डलाय नम ४ ॥ अर्घपात्रा
य नम ४ ॥ ॐ रवथेन ॥ ॐ न॰ स्नान नय ॥ धूप आनिम
ड्राकेन ॥ ॐ नमः स्कन्दाय ॥ ॥ पात्रपूजा ॥ चतुर्थि
भय नम ॥ ॐ अग्निमण्डलाय नम ४ ॥ श्री पात्राय नम
४ ॥ मूर्तन थाने ॥ मूलन नाक थाय १० ॥ ॐ न॰ स्नान
नय ॥ ॐ नमः स्कन्दाय ४ ॥ गुरु नार्यन ॥

आत्म पूजा॥ ॐ आत्मचन्दनं नमः॥ क्लीं अक्षतं नमः
॥ ऐं सौः नात्म पूष्पं नमः॥ नवैद्य याय नमः॥
पिठ पूजा॥ ॐ आधारशक्ति कमलासनाय नमः

ॐ नमः श्रीगणदेवताय नमः॥ पूजाप्रारम्भ॥ ॐ आत्म
तत्वं शोधयामि स्वाहा॥ क्लीं विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा॥ सौः
शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा॥ धूपनीशिय॥ द्वारपूजा॥ ॐ हीं श्री
द्वारदेवताभ्यो नमः॥ द्वारशक्तिभ्यो नमः॥ धर्मशिवत्रूपराय॥ ॐ आ
धारशक्ति कमलासनाय नमः॥ आसनशुद्धि क्रतन॥ अपसर्पन्तु
ता। ये भूता भुवि संस्थिता। ये भूता विघ्नकर्तार। ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥
दशदिग्बन्धन॥ गुरुनमस्कार॥ अखण्डमण्डलाकारं व्या
प्तं येन चराचरं। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ उप
द

स ॥ ऐं गुरुस्थान ॰ ॥ पदन्यास ॰ ॥ ऐं गनपतये नम ॥ मू
लत्रानायाम ॥ पदन्यासस्थितयास्त्र ॥ ऊँ हौँ क्रौं १० ॥ वाम
कर्णन्यासप्रयाय ॥ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नम ॰ ॥ ह्रीं तर्जनिकाभ्यां
नम ॰ ॥ सौँ ॰ मध्यमाभ्यां नम ॰ ॥ ऐं अनामिकाभ्यां नम ॰ ॥ ऐं
क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नम ॰ ॥ सौं ॰ करतलपृष्ठाभ्यां
नम ॰ ॥ ऐं हृदयाय नम ॰ ॥ क्लीं शिरसे स्वाहा ॰ ॥ सौं ॰

शिखाय वषट् ॥ ऐं कवचाय हूं ॥ क्लीं नेत्रत्रयाय वौष
ट् ॥ सौं ॰ अस्त्राय फट् फट् ॰ ॥ श्रीचक्रन्यास ॰ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं वि
द्ये चक्रासनाय नम ॰ हृन्यास ॰ ॥ ऐं क्लीं श्रीं सर्वकानवचक्रा
सनाय नम ॰ स्कन्धन्यास ॰ ऐं क्लीं श्रीं सर्वक्लानवचक्राहनाय
नम ॰ ॥ शिखान्यास ॰ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वदस्थनवचक्रायन

म ॥ कं ०स ॥ ॐ ह्रां श्रीं वह्नि र्द्द शावचक्रायनम ॥
ह्रुदयस ॥ ॐ ह्रां श्रीं व र्द्द शानवक्रा नम ॥ निद्रास ॥
ॐ ह्रां श्रीं ऊर्ध्व दवकमलासनायनम ॥ लिंगस ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं षोडशदलकमलासनायनम ॥ मुद्रानस ॥
ॐ ह्रां श्रीं वनुनमहाशिवशक्त्यैनम ॥ पा०स ॥ माह

कान्यासयायः ॥ भावस्तकतंन ॥ सूयन ॥ ॐ क्रौं सौं
क्लीं क्लूं ह्लूं श्रीमहाशितपूवसून्दत्रिभ्याचाद्कौंपूजा
याभि क्लूं न र्वयामिनम ॥३॥ ऊर्ध्व ॥ शखपूज ॥ ॐ सूर्य
मण्डलायनम ॥ ह्रां सूर्यमण्डलायनम ॥ लेखथाने
॥ गंगवजमनार्वब ॥ गमदावतिसनस्वति ॥ नर्मदासि

न्ह्यू कावँ ना। ह्लस्मि ल्सें निर्धि क्यू॥ कनन ३॥ वंबनू
ध्यायनम॥ ४॥ ॐ खमरु ३ ॐ बतँजादबनायनम॥ ४॥ वँन
स्नानन प॥ ४॥ (वन। आनि। ॐ खमुद्राकन॥ ४॥ अनम
मस्कंराय॥ पात्रपूजा॥ यगुपिभसनायनम॥ ४॥ ब ज
सनायनम॥ ४॥ नँन्हिप्रिमलुलायनम॥ ४॥ क्रौं सूर्यम

लुलायद्वादशकला: मनँनम॥ ४॥ श्रीपात्रायनम॥ ४॥
कानन मस्कन॥ मूवलसाय॥ लँबनराय॥ ४॥ सौं॥ व
स्रायरुद्र॥ नँ कबवाद्रूँ॥ नूवगुजन॥ पँयमुद्राकन
॥ द्रांँ द्रीँ क्रौँ ब्लूँ सँ॥ ४॥ मूननजप॥ १०॥ नँ जूमृन। जूमृनाहवं
जूमृनवबिनि। जूमृनं। भ्यावयरस्रारा॥ (मनू। आनि।

मुद्राकन॥ मनमकुद्रा (ला धन३॥ बिन्दुमुद्रा नमस्त्रि
कायावयारिसथ्यान॥ वृक्षालुखनुसरनं। मलुम
नमस्ते एव॥ आयुमिरिमहायाएं॥ पीयूखनसमाएव
मनन॥ कनन॥ सौं स्राममममलुयबातआकलात्मनें
नम॥ आनन्द हे नवायवौषट्॥ आनन्द

हें नवि व बट्॥ ॐ वनुर्नवनि कलामनं लानम॥ मूं
हं पूं मूं नूं नम॥ नन। स्नाननय॥ धनु। आनिमद्राक
न॥ आनमसमस्कायय॥ गुरूनर्पणलिलस॥ नें क्रीं
श्रीं श्रीं यत्र मैं श्रि गुरु श्रीपादुकां पूजयामि नर्पया
मिनम॥ नें क्रीं श्रीं श्रीं यत्र म गुरु श्रीपादुकां पूज
यामि नर्पयामिनम॥ नें क्रीं श्रीं श्रीं गुरु श्रीपादुका

पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ मूल न, नूजनस ३ ॥ ज्ञा
स्म पूजा ॥ ऐं ज्ञास्मचन्दनेनमः ॥ क्रौं ज्ञास्मसिन्धुन
नमः ॥ स्रौं ॥ ज्ञास्मजूकतं नमः ॥ ऐं क्रौं स्रौं ज्ञास्मपूष्पंन
मः ॥ पुरश्चदकाय ॥ युग्मस्वतिअ, थमाकूरदलवपु ॥
पि० पूजायाय ॥ ऐं क्रौं श्रीं पा० दवमाली नमः ॥ ऐं ज्ञा

धा नर्शक्ति कमलासनाय नमः ॥ ब्रह्मप्रेतासनायन
मः ॥ विष्णुप्रेतासनायनमः ॥ रुद्रप्रेतासनायनमः ॥
॥ ॐ ईश्वरप्रेतासनायनमः ॥ ह्स्रौं ॥ सदाशिवप्रेतासना
यनमः ॥ षडङ्गन्यासयाय ॥ कनकदुरिकामुद्रानवा
वाहन ॥ मत्स्यपद्मवनालहें ॥ कालानन्दविग्रहं । ह

गत्रय हृदि गमान ॥ नक्षहृदि पत्रमध्यति ॥ त्रिखण्डामुद्रा
नः स्नानजलावध्यान ॥ वाताक्रम गुलालासी ॥ वनु
वाकुंत्रिल्लावना ॥ पाशांकुश गनाग्ध्यप ॥ धानयक्रिलि
कारुॐ ॥ दवपिपावनप ॥ दवलिरक्रिमूनरुँ ॥
पतिवानसमंन्विगं ॥ ॐ वक्षुं पूॐ पित्वामि गावतंस

स्थिनारुव ॥ प्राणप्रतिष्ठा ॥ ह्रां ह्रीं ह्रौं ३ आवाहन ॥
श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि ॐ ह्लागच्छ २ ॐ हतिष्ठ २ अत्र
सैंनिधित्रारुव ॥ कन्न ॥ ॐ दमासनं नम ॥ [illegible]
स्वागतं नम ॥ स्नानयावकं ॥ पाद्यं नम ॥ अर्घं नम
॥ मधुपर्कं नम ॥ आचमनियं नम ॥ स्नानं नम ॥

चन्दनं नमः॥ रक्तचन्दनं नमः॥ सिंधूरं नमः॥ कुं
कुमं नमः॥ ॐ ह्लां पवित्रं नमः॥ पुष्पं नमः॥ धूपं न
मः॥ दीपं नमः॥ नैवेद्यं नमः॥ तर्पणं नमः॥ ताम्बूलं नम
ः॥ ध्यां मूलमन्त्रेण पूजा॥ आनिमुद्रानं नमस्कारं
ः॥ आस्ता काया वः जाप नन पूजा याय॥ मूलन

॥ त्रिपाकुलि द्वः॥ ऐं क्रीं श्रीं जूं कामेश्वरानाथ श्री नित्त
॥ श्री पादुकां पूजयामि नमः॥ ऐं क्रीं श्रीं श्री परमेष्ठिगु
रु श्री पादुकां॥ ऐं क्रीं श्रीं श्री परमगुरु श्री पादुकां
ः॥ ऐं क्रीं श्रीं श्री गुरु श्री पादुकां॥ ऐं क्रीं श्रीं बटुगड
नाथ श्री पादुकां॥ ऐं क्रीं श्रीं प्रकटयोगिनि वटुन

स्त्रनमोहन श्रीपादुकां ४।। ऐँ क्लीँ सौँ षोडशदलचक्र गुप्तया
गिनि श्रीपादुकां ४।। ऐँ क्लीँ सौँ अष्टदलचक्र गुप्ततरयोगि
नि श्रीपादुकां ४।। ऐँ क्लीँ सौँ चतुर्दशारचक्र संप्रदाय
योगिनि श्रीपादुकां ४।। ऐँ क्लीँ सौँ बहिर्दशारचक्र कु
लोत्तीर्ण योगिनि श्रीपादुकां ४।। ऐँ क्लीँ सौँ अन्तर्दशार

चक्र निगर्भयोगिनि श्रीपादुकां ४।। ऐँ क्लीँ सौँ अष्टको
ण सर्वरोगहरचक्रस्य योगिनि श्रीपादुकां ४।। ऐँ क्लीँ सौँ त्रि
कोणचक्र सर्वसिद्धिप्रद अतिरहस्ययोगिनि
श्रीपादुकां ४।। ऐँ क्लीँ सौँ सर्वानन्दमय विन्दुचक्र प
रापररहस्ययोगिनि श्रीपाँ महात्रिपुरसुन्दरि श्रीपा

दकीं ८॥ ॐ क्रौं ॐ न्त्रंना ■ पनायनाभिन हूस्प याभिनि
गनसर्व वकुं श्व त्रि श्रीम फात्रि पू नस्तून्द नी॥ सर्वोप
घान्ते ८ पूजितानुर्पिं ना सं क्रु ८॥ ॥ नवमहाकन्न
८॥ ड्रां ड्रीं क्लीं ब्लूं स क्रां क्ष्म्ल्व्र्यूं सौं न्रें ८॥ त्रियाकूलि॥ थम
नाक्कानंस्त्राय॥ ३ ॥ क्रां क्रीं स ८ श्रीसूर्याय न

म ८॥ सूर्याय कं ८॥ ॐ ह्रु स्किं पिश्माचित्रिं त्रें स्वाहा ८।
॥ गणेश याकं॥ ॐ हूं स ८॥ ३॥ शिव याकं॥ क्लीं कृ
ष्णाय गोविंदाय गोपिजनवल्लभाय स्वाहा ८॥ ३॥ कृष्ण
याकं॥ न्त्रें क्लीं सौं ८॥ ३॥ वानायाकं॥ क्लीं फ्लीं म्लीं ८॥ ३॥
पञ्चदशि ८॥ ॐ क्रीं नाक्ष पद ह्रूं क्लूं ह्रूं क्ष्म्ल्व्र्यूं

ड्ब्रावल्लितिबूमद्वामि क्रूँ रूँ मदानकृ३ वाँमाँ हूँ

स ॥ मृत्युहृत्य स्वाहा ॥ ३ ॥ हगवत्तिया ॥ वलिविधु

॥ ५ ऐं क्रीं श्रीं वाँ वटुकाय वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ऐं

क्रीं श्रीं यां योगिनिभ्यो वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ऐं -

क्रीं श्रीं क्षां क्षेत्रपालाय वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥

ऐं क्रीं श्रीं गं गण पतये वलिं गृह्ण २ स्वाहा

॥ ऐं क्रीं श्रीं हुं क्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो व

लिं गृह्ण २ हूँ फट् स्वाहा ॥ मूलनविधः वलि ॥

३ ॥ कं स्वानतय ॥ वटुका द्या ॥ स्तूनासर्वेस

र्वसिद्धाविधायन ॥ ममभक्तिपूक्तिभूक्ति

श्री अस्तु न ल्र्लैन्त्र सादन ॥ नानाव, यानि मुद्रा कन
॥ धूपं, दिपबीय ॥ ॥ त्रियाञ्जलि ३ ॥ जप १०८ ॥ माल
पूजा ॥ मां मालिम हा माय, ह्ला लक्ष्मि क्लि स्व नू यिनि,
य गु र्व र्ज्वि थ्यिन क्रु न स्मा त्वं सिद्धी दाएव ॥ जप स
मर्पन ॥ गुह्याति गुह्य, गोप्ता त्वं गृहाना नास्म

त्कृतं जपं, सिद्धिर्भवतु मा ॥ त्व त्वत्प्रसादात्वयि
स्थितं ॥ लखनमनुन्दयक, कें दा दा नप, चन स्वा
नन्य ॥ स्तोत्र ॥ नुखनुम नु ला कार्तं ॥ स्तोत्र ॥
माया कृनुलनि, कृयाम धूमति कालि, कला
मालिनि, मातंगि विजया जया हगबति देवि, शि

वागीश्वरि । हीं क्लिं हीं कनवल्लरी त्रिनयनि वागवादि
नि ह्रैं नवि ॐ कालिस्फि पूजायजायजनमे मातकौमा
रि यसि ॥ आवाहनं नजानामि । नैवनजानामिपूजनं
विसर्जनं । नजानामि । क्षमतियुभस्वरि ॥ ॐ नत्रजनं
ला स्कि व्रभंवजनं मम । नस्पात्कारननलवं

न । नूकमी पत्रमस्वरि ॥ ॥ पंचमुद्रानं नमस्कारं ॥
ॐ ह्रीं क्लीं ह्रूं सं ॥ मूलमंत्र पर्ष ३ ॥ बिनयागिनी पूजा ॥
लक्षि पूजा ॥ तत्र धनरु ३ ॥ ॥ ऐं ह्लीं सौं ॥ सर्वतत्त्वं भयं जि
वं षयामि स्वाहा ॥ मातृन्यास याय ॥ पाद्यसर्वाद
स्नान । काया बसमर्पनयाय ॥ ऐं क्लीं ओं तत्त्व सर्व

क्कार्यलीस्वन्ह स्वाहा ॥ ॐ अकायाव ॥ साधुवासा
सा धुवाकमर्प। ऊष्ठदाव त्रिनममः। नत्तर्वएगवल्व
। ॐ हा नानाथनेममः ॥ सहान मूद्वान। वलिविसर्ज
न ॥ गच्छ गच्छ यन स्थानं। इह स्थानं यत्र मे श्वित्रि। यत्र
ब्रह्मादयो देवा। न विदुः ॥ यत्र मे पदं ॥ ॥ दव। वलि

। क्षमस ॥ स्थान क्रकायाव। वलिसवाय ॥ यमसूत्र ॥
॥ पाद्रसवाद। तर्पलमा ध्याबकाम ॥ ॐ प्रीतयुनासन
स्थाहवस्य हननाहे नवामन्त्र मूर्ति। वलिवलि
सनाथ ॥ प्रनतिहनिहना लोकपालाहलिन्द्रा ॥ द
त्रायकासदे श्रीपिहगलसहिता ॥ मानवौ कुँद्रवाल

॥ यागिन्या यागकृता । ऊनवलखवलायलमंतनवि
वन्तू ॥ पियन्तू देवता ॥ सर्व्व समुद्र समन्त विपा ॥ या
गिन्य ॥ ॐ रूपालाश्च नदद वय वस्थिता ॥ लोकपाय
। नय ॥ सर्वत्र उदककाय ॥ गंगा बस्न नर्म्मदा स
यमून गोमतीत्रि गोमति । पूर्णस्थान गयां त्रिया

गवदली वानानस्नि सिन्धू । कुलासंनिसन स्वति प्र
हतिहि वृष्णानु सानु दल । तीर्थस्नान सहस्र कोटि
नद श्रीचक्रपापादकं ॥ वलिकाय ॥ वलिसकनान
॥ ॐ निर्म्माल्यवासिन्य नम ॥ सूर्यसाक्षिकाय ॥ ॐ
नित्यकर्म्म संपूर्न निमित्यार्थन कृतकर्म्मसाक्षिना

श्रीसूर्याय मूर्त्येला जूर्धं नमः पूलवनमः ४ ॥ कृ ति
सूरवम । प्रथ निहमाफल्सूर । सँवत्र न ह न थि नना । या दु
कृ कृ । वि । श्व । श्वन न का या इ मा मूर ४ ॥ ॥ ॥ ॥

म
सूर्यपूजा ॥ ॐ सिद्धिनानिनगह्ने स्कोकू धमगीदूतासद
श्रीगक्षोविकूसरव्द्वेव ध स्मेयाहानमाम्कुम ॥ ॐ का
लिरवर्जद्वनीलाह्दत्रायेनमधावनस्त्रानमय ॥

१ पिशाचयदूतपूजा ॥ तुण लहान क्रुतसियक धमकुन ॥ ॥
ह्रां ह्रीं ह्रूं हूं फट् स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ स्मुगलबलि धूपन मम शक्षादपक्तिनः
चण्डिकाधिनिदानन दातुनायह्वि नासन ॥ बलिविय ॥ ॐ दस्तुगस्त्या
बलिय फट् २ स्वाहा ॥ थानस ॥ धूपदीप गन्धाबवलिसनय ॥ विसर्जनयाय ॥ ॥
न्यास ॥ ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ मध्यमाभ्यां नमः ॥

ॐ अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ कनीष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां
नमः ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥ ॐ शिरसे स्वाहा ॥ ॐ शिखायै वौषट् ॥ ॐ कवचा-
य हूं ॥ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ अस्त्राय फट् ॥ थनस्वानन्नक ॥ इन्तुयाकक
नेन ॥ ॐ श्मश्वे नमः ॥ करपलस ॥ ॐ शक्तिकायै नमः ॥ थालस ॥ ॐ य-
क्षिण्यै नमः ॥ दुगथिस ॥ ॐ निवृत्यै नमः ॥ क्रियानस ॥ उवन्नगथान

ॐ शिव गायत्री का न ॥ पशुपाशाय विद्महे विश्वकर्माय धीमहि तन्
न्नो माहेश्वर प्रचोदयात् ॥ ३ ॥ समय नके ॥ द्वेय ॥ थमन्त्रन ॥ क्रौं ह्रौं ह्रूं हूं
ष्टछिमाक्षायच्छगायह्रूं हूं फट् स्वाहा ॥ उउमानयानासा नकेविय ॥ ह्रूं ग्रू
ग्रयादि ॥ वाक्ष ॥ ठकाक्षगवलिनद ॥ न्यास्य ॥ मिवसवलिविय ॥ ह्रूं द्रू
र्मेर वहू लिस्वाहा ॥ ह्रूं दुर्गेदेवी ङ्हागक्ष २ वलिगृह्ण २ ह्रूं हूं फट् स्वाहा

॥ ३ ॥ मनाविय ॥ वक वलिविय ॥ थानदष्टक लामासिंयं मल्लमासिगदा
पिथ्यावलिगृह्ण हूं फट् मान ४ क्षगवक वलिनव ४ ॥ कावनकाय ४ ॥ ह्रूं
श्रूरवनक्षय ४ ॥ ◄ ॥ चाकाय : हनायन म ३ ॥
क्राय x श्री महादेवायनमः ॥ नो गिय ३ ॥ ◆ ह्रूं क्रा
त्मरख (ह्म) क्षयामिस्वाहा ॥४॥ ह्रूं विद्यानत्वं

२५

ॐ भयामि स्वाहा ॥४॥ सगिवनर्त्तें ॐभ्र

यामि स्वाहा ॥ ॥ या ॐ याम ॥ ॐ १ इकाय ॥

ॐ १ ॥ स्र ४॥ सा विज्ञाय ॥ ॥ ब्रतगन्या स

ह्र ज्र ग्र थ स्त्रीं य न म ॥४॥ ह्र नर्जे नी स्त्रीं य न म

स्र ४॥ सभ्र सा स्त्रीं य न म ४॥ ॐ ज्र ना मि का स्त्रीं य न म

न

ॐ क लि ष्ठि का स्त्रीं य नमँ ॥ ॥ स्र ४॥ क लं तन स वि

थि स्त्रीं न म ४॥ ष्ठ न ह्र द य थ नाय नं ४॥ स र्व त्र हा या व

ज्ञा ग्र नि काय ४॥ स्त्रीं ४ ज्र स्त्राय रु रु ॥ ॥ ध्यान ॥

पूर्जी मूडान स्वान ज्ञा डाव ॥ वीनथे ॥ कच्छून

ॐ त न कन्ना व नान नं ॥ स सान सान रुरु ॐ इ

ताान सदान मन हृदयानवन्दे ॥ रुवैरुवानिस

पनिन मामि ॥४॥ श्रीअनवृश्वै मूदान स्मान ओडव

धानर्थ ॥ कृच्यून (अनकनुश्व तान सं सान सान रुञ

(गहृताान ॥ सदान मन हृदयानवन्दे रुवैरुवानी

सवनिन मामि ॥४॥ श्रीअनवृश्वै नम ४९ व किनत ॥

सौं ह्रूँ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि परकाया लब्धा शिवरु मक्षय पापं सं

हार यपापं क्लीं शिवा शिवसहितायपक्काादि शिवा नंदिनस्वान्मन

शिवतत्वं शोधयामि शिवाद्देस्वाहा ॥३॥ ॐ क्लीं सौं ः क्लीं क्लीं

ह्रूँ सर्वतत्वं शोधयामि सर्वजन्मकृत पापं संहारय

रमात्मापर शिवशक्ति तायपरन्त्या दि शिवा नंद त्रिगन्त्वा

मन सर्वतत्वं शोधयामि शिवाद्देस्वाहा ४॥

१ श्री थुद्दिव स का ०

आवाहनमाय ॥ चिन्ता धु क ॐ ना ग कृं २ ॐ ना नि स्व २

ध्या सै ग्रा नि ब्रु ॥ ॐ क्रीं ह्रीं

ॐ क्लीं आत्मतत्वं शोधयामि ॐ स्वाहा नद्ध आत्मतत्व कृ गं पार्श्वसहाय २

ब्रु ॐ क्ला सनस्व नीसहिताय, धनास्यादिमाया नं भकलिं [illegible] स्वात्मन

आत्मतत्वं शोधयामि शिखार्द स्वाहा ॥ क्लीं कूँ विद्यातत्वं शोधयामि ॐ नि

कृपालश्व विद्याकृनपार्श्वसहाय २ ल ॐ क्ली नारायनसहिताय शु

द्ध विद्यादिशिवा नं त्रिस्वात्मन विद्यातत्वं शोधयामि शिखार्द स्वाहा ॥

ॐ ह्रैं ५ आ मंत्र रतो सि षो गिं न्याः सगुरां
गरापूर्वकं ॥ पुष्प दु वीक्षतं चैव सौम
न स्यं प्र य च्छ मे ॥ अ ग्र मे ग ट दृ प्रीत्यर्थं
निर्मंचरा करोम्यह मह ॥